

ए बात म सहमती हवय क पतरस के दुवारा लिखे दू चिट्ठी म ले एह पहिली चिट्ठी ए। ए चिट्ठी मसीहीमन ला लिखे गे हवय, अऊ ए चिट्ठी म ओमन ला परमेसर के चुने मनखे कहे गे हवय। ओमन जादा आनजात बसिवासी रहिन अऊ एसिया प्रदेस के उत्तर के इलाका म बगर गे रहिन। पतरस के ए चिट्ठी ला लिखे के खास उदेश्य एकर पढ़इयामन ला उत्साहति करना रहिसि, जऊन मन अपन मसीही बसिवास के कारन दुःख-तकलीफ अऊ सतावा के सामना करत रहिन। पतरस ह ओमन ला यीसू के सुघर संदेस के सुरता कराथे काबरका यीसू के मरितू, फेर जी उठे अऊ फेर आय के वायदा ह ओमन ला आसा देखे अऊ जब यीसू ह फेर आही, त ओमन अपन इनाम पाहीं। पतरस ह अपन चिट्ठी के पढ़इयामन ला उत्साहति करथे का सतावा के बीच म ओमन अपन बसिवास म मजबूत बने रहंय अऊ ओह ए बनिती घलो करथे का ओमन अइसने जनिगी जीयंय, जऊन ह मसीह ला भावय। ए चिट्ठी ला खाल्हे लिखे भाग म बांटे जा सकथे।

जोहार 1:1-2

परमेसर के उद्धार के सुरता 1:3-12

पबतिर जनिगी जीये बर सकिछा 1:13-2:10

दुःख अऊ सतावा के समय एक मसीही के जम्मेदारी 2:11-4:19

मसीही नमरता अऊ सेवा 5:1-11

सार 5:12-14

**1** पतरस कोतले, जऊन ह यीसू मसीह के प्रेरित ए, परमेसर के चुने संसार के ओ अजनबीमन ला जऊन मन पुनतुस, गलातिया, कपपदुकिया, एसिया अऊ बतूनिया म एती-ओती बगर गे हवंय, 2 जऊन मन परमेसर ददा के पूर्व-गयान के मुताबकि पबतिर आतमा के पबतिर करे के दुवारा, यीसू मसीह के हुकूम माने बर अऊ ओकर लहू के छड़िके जाय बर चुने गे हवंय।

तुमन ला बहुतायत ले अनुग्रह अऊ सांति मलिते रहय।

**जीयत आसा खातिर परमेसर के इसतुति**

3 हमर परभू यीसू मसीह के ददा अऊ परमेसर के धनबाद होवय! ओह यीसू मसीह के मरे म ले जी उठे के दुवारा, अपन बड़े दया के कारन, हमन ला जीयत आसा खातिर नवां जनम दे हवय, 4 ताका तुमन ला ओ वारसि के अधिकार मिलिय, जऊन ह तुमन बर स्वरग म रखे गे हवय, अऊ ओह कभू नास नई होवय, खराप नई होवय या मुरझावय नई। 5 तुमन बसिवास के दुवारा, परमेसर के सामर्थ ले, ओ उद्धार खातिर, जऊन ह आखिरी समय म परगट होय बर तय्यार हवय, सही रखे गे हवव। 6 एम तुमन बहुंत आनंद मनावव, हालाका अब कुछू समय बर, तुमन ला जम्मो कसिम के परछा के कारन दुःख सहे बर पड़त हवय। 7 एह एकरसेती होईस ताका तुम्हर बसिवास के असली परख हो सकय, जऊन ह सोना ले घलो जादा कीमती अय; सोना ह आगी म परखे जाय के बाद घलो नास हो सकथे; अऊ जब यीसू मसीह ह परगट होथे, तब तुम्हर ए बसिवास के नतीजा ह इसतुति बड़ई अऊ आदर म होवय। 8 हालाका तुमन ओला नई देखे हवव, तभो ले तुमन ओला मया करथव, अऊ हालाका तुमन ओला अब नई देखत हवव, पर ओकर ऊपर बसिवास करत हवव अऊ आनंद मनावत हवव, जेकर बखान नई करे जा सकय अऊ जऊन ह महिमा ले भरे हवय, 9 काबरका तुमन, अपन बसिवास के मकसद ला पावत हवव, जेकर मतलब होथे—तुम्हर आतमा के उद्धार।

10 एही उद्धार के बसिय म, अगमजानीमन बहुंत खोजनि। ओमन ओ अनुग्रह के बारे म कहनि, जऊन ह तुमन करा अवइया रहिसि अऊ बहुंत धयान लगाके, 11 ओमन ओ समय अऊ हालत ला जाने के कोसिस करनि, जऊन ला मसीह के आतमा, जऊन ह का ओमन म हवय, इसारा करत रहिसि, जब ओह मसीह के दुःख उठाय अऊ ओकर

तुरते बाद ओकर आय के महिमा के बारे म कहसि। 12परमेसर ह एला अगमजानीमन ला बताईस की ओमन अपन खुद के सेवा नई करत रहिनि, पर ओमन तुम्हर सेवा करत रहिनि, जब ओमन ओ बातमन के बारे म कहनि, जऊन ला अब तुमन ओमन ले सुने हवव, जऊन मन स्वरग ले पठोय पबतिर आतमा के दुवारा तुमन ला सुघर संदेस के परचार करे हवव। अऊ त अऊ स्वरगदूतमन ए चीजमन ला देखे के ईछा करथें।

### पबतिर बनव

13एकरसेती, अपन मन ला काम करे बर तयार करव; संयमी बनव; ओ अनुग्रह ऊपर अपन पूरा आसा रखव, जऊन ह तुमन ला यीसू मसीह के परगट होय के समय दयि जाही। 14परमेसर के हुकूम ला मानव अऊ जब तुमन अगयिानता म रहत रहेव, ओ समय के खराप ईछा के मुताबकि आचरन इन करव। 15पर जऊन ह तुमन ला बलाय हवव, ओह पबतिर ए, त तुमन घलो अपन जम्मो काम म पबतिर बनव। 16काबरकी परमेसर के बचन म ए लखि हवव: “पबतिर बनव, काबरकी मेंह पबतिर अंव।”

17जब तुमन अपन पराथना म, ओला “हे ददा” कहथिव, जऊन ह हर एक मनखे के काम के नियाय बगिर पखयिपात के करथे, त तुमन अपन जनिगी ला इहां परदेसी के सही ओकर भय म बतावव। 18काबरकी तुमन जानत हव कि तुम्हर खोखला जनिगी, जऊन ह तुम्हर पुरखामन ले चले आवथे, ओकर उद्धार सोना या चांदी जइसने नासमान चीज के दुवारा नई होय हवव, 19पर तुम्हर जनिगी के उद्धार एक नरिदोस अऊ नसिकलंक मेढा-पीला याने की मसीह के कीमती लहू के दुवारा होय हवव। 20ओह संसार के सरिस्टी के पहिली ले चुने गे रहिसि, पर तुम्हर खातरि, ए आखरी समय म ओह परगट होईस। 21तुमन ओकर दुवारा, ओ परमेसर ऊपर बसिवास करथव, जऊन ह ओला मरे म ले जयिईस अऊ ओकर महिमा

करसि, अऊ एकरसेती तुम्हर बसिवास अऊ आसा परमेसर ऊपर हवव।

22अब सत ला माने के दुवारा, तुमन अपन-आप ला सुध करे हवव अऊ तुमन म अपन भाईमन बर नसिकपट मया हवव, त अपन जम्मो हरिदय के संग एक-दूसर ला गहरिई ले मया करव। 23तुमन नासमान नई, पर अबनिासी बीजा ले परमेसर के जीयत अऊ सदा ठहरइया बचन के दुवारा नवां जनम पाय हवव। 24काबरकी,

“जम्मो मनखेमन कांदी के सही अंय,  
अऊ ओमन के जम्मो महिमा ह जंगली  
फूल सही अय;  
कांदी ह सूख जाथे अऊ फूल ह झर  
जाथे,

25 पर परभू के बचन ह सदाकाल तक बने  
रहथि।”

अऊ एह ओही सुघर संदेस के बचन ए, जऊन ह तुमन ला सुनाय गे हवव।

2 एकरसेती, अपन-आप ला जम्मो कसिम के बईरता, छल-कपट, ढोंगीपन, जलन, अऊ बदनामी ले दूर रखव। 2नवां जनमे लइकामन सही सुध आतमकि गोरस के लालसा करव, ताकी एकर दुवारा अपन उद्धार म बढ़ सकव, 3अब तुमन ए जान गे हवव की परभू ह बने अय।

### जीयत पथरा अऊ परमेसर के चुने मनखेमन

4जब तुमन ओकर करा, जऊन ह जीयत पथरा ए, आथव, जऊन ला मनखेमन गरहन नई करनि, पर ओह परमेसर के नजर म चुने हुए अऊ कीमती अय- 5त तुमन घलो जीयत पथरामन सही एक ठन आतमकि घर बनत जावत हव, जेकर ले पबतिर पुरोहित बनके अइसने आतमकि बलदिन चघावव, जऊन ह यीसू मसीह के दुवारा परमेसर ला गरहन लइक होवव। 6काबरकी परमेसर के बचन ह ए कहथि:

“देखव, मेंह सयियन म एक पथरा रखत  
हवंव,

ओह चुने हुए अऊ कीमती कोना के  
पथरा ए,

अऊ जऊन ह ओकर ऊपर बसिवास  
करथे,

ओकर कभू बेजत्ती नई होवय।”

7 अब तुमन बर, जऊन मन बसिवास करथव,  
ए पथरा ह कीमती ए। पर जऊन मन बसिवास  
नई करंय, ओमन बर:

“जऊन पथरा ला घर बनइयामन बेकार  
समझे रहिनि,  
ओहीच ह कोना के पथरा हो गे  
हवय।”

8 अऊ परमेसर के बचन ह कहथि,

“एक ठन पथरा मनखेमन के लड़खड़ाय  
के  
अऊ एक ठन चट्टान ओमन के गरि  
के कारन होही।”

ओमन लड़खड़ाथे, काबरकी ओमन ओ  
संदेस ला नई मानय, जेकर बर ओमन  
ठहराय गे रहिनि।

9 पर तुमन एक चुने बंस, राज-पदधारी  
पुरोहित, पबतिर जाति अऊ परमेसर के  
खुद के मनखे अव, ताकि तुमन ओकर  
परसंसा करव, जऊन ह तुमन ला अंधियार  
म ले अपन अद्भूत अंजोर म बलाय हवय।

10 पहिली तुमन परमेसर के मनखे नई रहेव,  
पर अब तुमन परमेसर के मनखे अव; एक  
समय रहिसि, जब तुमन परमेसर के दया ला  
नई पाय रहेव, पर अब तुमन ओकर दया ला  
पा गे हवव।

11 मयारू संगवारी हो, मेंह तुमन ले बनिती  
करत हंव की अपन-आप ला, ए संसार म  
परदेसी अऊ अजनबी जानके, पापी ईछा ले  
बचाय रखव, जऊन ह की तुम्हर आत्मा के  
बरीध म लड़थे। 12 मूर्ती-पूजा करइयामन के  
बीच म तुम्हर चाल-चलन सही रहय, ताकि  
कहू ओमन तुम्हर ऊपर गलत काम करे के  
दोस लगाथे, त ओ दिन, जब परमेसर हमर  
करा आही, त ओमन हमर बने कामन ला  
देख सकंय अऊ परमेसर के महिमा करंय।

सासन करइया अऊ मालकि मन के अधीन  
रहई

13 परभू के हति म, अपन-आप ला  
मनखेमन के बीच ठहराय हर हाकमि के  
अधीन रखव; चाहे परधान हाकमि के रूप  
म राजा के अधीन होवय, 14 या राजपाल के  
अधीन रहव, काबरकी ओमन कुकरमीमन  
ला दंड दे बर अऊ बने काम करइयामन के  
परसंसा करे बर राजा के दुवारा ठहराय  
जाथे। 15 काबरकी एह परमेसर के ईछा ए  
की भलाई करे के दुवारा तुमन मुख मनखेमन  
के अगियानता के बात ला बंद कर देवव।  
16 सुतंतर मनखेमन सही रहव, पर अपन  
सुतंतरता के आड़ म बुरई झन करव; परमेसर  
के सेवकमन सही रहव। 17 जम्मो झन के  
आदर करव; संगी बसिवासीमन ला मया  
करव; परमेसर के भय मानव अऊ राजा के  
आदर करव।

18 हे गुलाममन हो, पूरा आदर के संग  
अपन मालकिमन के अधीन रहव, न सरिपि  
बने अऊ समझदार मालकि के, पर नरिदयी  
मालकि के भी अधीन रहव। 19 काबरकी  
यदि कोनो परमेसर ला जानके, अनियाय के  
दुःख-तकलीफ सहथे, त एह परसंसा के बात  
अय। 20 कहू तुमन गलत काम करे के कारन  
मार खाथव अऊ ओला सहथिव, त तुम्हर  
बर एह कोनो बड़ई के बात नो हय। पर कहू  
तुमन भलाई करे के कारन दुःख सहथिव, त  
एह परमेसर के आघू म बड़ई के बात अय।  
21 तुमन ला एकरे खातिर बलाय गे रहिसि,  
काबरकी मसीह ह तुम्हर खातिर दुःख  
भोगसि अऊ तुम्हर बर एक नमूना रखे हवय  
की तुमन ओकर मुताबिक चलव।

22 “ओह कोनो पाप नई करसि

अऊ ओकर मुहू ले कोनो कपट के  
बात नई नकिरसि।”

23 जब मनखेमन मसीह के बेजत्ती करनि,  
त ओकर जबाब म ओह ओमन के बेजत्ती  
नई करसि; जब ओह दुःख उठाईस, त ओह  
कोनो धमकी नई दीस, पर बदले म, ओह  
अपन आसा परमेसर ऊपर रखसि, जऊन

ह धरमी नियायी अय। 24ओह खुद हमर पापमन ला अपन देहें म कुरस ऊपर सहसि, ताका हमन पाप खातरि मर जावन अऊ धरमीपन खातरि जीयन। ओकर घावमन के दुवारा तुमन चंगा होय हवव। 25तुमन भटके भेड़मन सहीं रहेव, पर अब तुमन चरवाहा अऊ आतमा के रखवार करा लहुंटे के आ गे हवव।

### घरवाली अऊ घरवाला,

**3** हे घरवालीमन हो, तुमन अपन-अपन घरवाला के अधीन रहव, ताका कहूं ओमन ले कोनो परमेसर के बचन ऊपर बसिवास नई करय, त ओमन घरवाली के सुघर बरताव के दुवारा जीते जा सकय; 2जब ओमन तुमन के सुधता अऊ बने चाल-चलन ला देखय। 3तुमन के सुधरता बाहरी सगार के दुवारा ज्ञान होवय, जइसने का बाल गुंथई, अऊ सोन के गहना अऊ आने-आने किसिम के कपड़ा पहिरई। 4एकर बदले, तुमन म भीतरी मनखे के गुन, नमरता अऊ सांत सुभाव के सुधरता होना चाही, जऊन ह नई मुरझावय अऊ अइसने बातमन परमेसर के नजर म बहुंत कीमती होथें। 5एही किसिम ले, पहिली जमाना के पबतिर माईलोगनमन, जऊन मन अपन आसा परमेसर के ऊपर रखत रहिन, अपन-आप ला सुघर बनाय करत रहिन। ओमन अपन घरवालामन के अधीन रहत रहिन। 6जइसने का सारा ह अब्राहम के बात मानय अऊ ओला अपन सुवामी कहय। कहूं तुमन भलाई करव अऊ कोनो चीज ले ज्ञान डर्रावव, त तुमन ओकर बेटी अव।

7हे घरवालामन हो, ओही किसिम ले अपन-अपन घरवाली के संग रहत समझदार बनव अऊ ओला नरिबल संगी जानके अऊ अपन संग ओला जनिगी के बरदान के वारसि जानके ओकर आदर करव, ताका तुम्हर पराथना म कोनो बाधा ज्ञान पड़य।

### भलाई करे म दुःख सहई

8आखरी म, तुमन जम्मो एक मन होके रहव; सहानुभूती रखव; भाईमन सहीं मया करव; दयालु अऊ नम्र बनव। 9बुरई के

बदले बुरई या बेजत्ती के बदले बेजत्ती ज्ञान करव, पर बदले म आससि देवव काबरका तुमन एकरे बर बलाय गे हवव, ताका तुमन ला आससि मलिय। 10जइसने का परमेसर के बचन ह कहथि,

“जऊन कोनो, जनिगी ले मया करे चाहथे  
अऊ सुघर दनि देखे के ईछा करथे,  
ओकर बर जरूरी अय का ओह अपन  
जीभ ला बुरई ले

अऊ अपन होंठ ला छल-कपट के बात  
ले दूरहा रखय।

11ए जरूरी अय का ओह बुरई ला छोंड़के  
भलाई करय;

अऊ ए घलो जरूरी अय का ओह सांती  
के खोज करय अऊ ओकर पाछू  
लगे रहय।

12काबरका परभू के नजर धरमीमन ऊपर  
लगे रहथि,

अऊ ओकर कान ह ओमन के पराथना  
ला सुनथे,  
पर परभू ह बुरई करइयामन के बरिध  
करथे।”

13यदा तुमन भलाई करे बर उत्सुक हवव, त तुम्हर हाना कोन करही? 14पर कहूं तुमन बने काम करे के कारन दुःख उठाथव, त तुमन आससि पाहू। मनखेमन ले ज्ञान डरव अऊ न घबरावव। 15पर अपन हरिदय म मसीह ला पबतिर परभू के रूप म जानव। जऊन कोनो तुमन ला तुम्हर आसा के बसिय म कुछू पुछय, त ओला जबाब देय बर हमेसा तयार रहव। 16पर ए काम ला सुध बविक म, नमरता अऊ आदर के संग करव ताका मसीह म तुम्हर बने चाल-चलन के बरिध म, जऊन मन खराप बात कहथि, ओमन अपन बात ले सरमन्दा होवय। 17कहूं ए परमेसर के ईछा अय, त बुरई करके दुःख भोगे के बदले, भलाई करके दुःख भोगे ह बने अय। 18काबरका मसीह ह याने धरमी ह अधरमीमन खातरि या तुम्हर पाप खातरि जम्मो के सेती एकेच बार मरसि का ओह तुमन ला परमेसर करा लानय। ओह देहें म

मारे गीस, पर आतमा के दुवारा जीयाय गीस, 19अऊ आतमकि दसा म, ओह जाके कैदी आतमामन ला परचार करसि, 20जऊन मन बहुंत पहिली परमेसर के हुकूम नई माननि, जब परमेसर ह नूह के दनि म धीर धरके इंतजार करत रहय, अऊ पानी जहाज ह बनत रहय। जहाज म सरिपि थोरकन मनखे याने जम्मो मलाके आठ झन पानी ले बंचनि; 21अऊ ए पानी ह बतसिमा के चनिहां अय, जऊन ह अब तुमन ला घलो बचाथे। एह देह के मइल धोवई नो हय, पर एह सुध बविक म परमेसर ले एक वायदा कई अय। यीसू मसीह के फेर जी उठे के दुवारा, ए बतसिमा ह तुमन ला बचाथे। 22यीसू मसीह ह स्वरग चले गीस, अऊ ओह परमेसर के जेवनी हांथ कोतहिं हवय अऊ जम्मो स्वरगदूत, अधिकार अऊ सामरथ ओकर अधीन म हवय।

#### परमेसर खातरि जनिगी बतिई

**4** जब मसीह ह देहें म दुःख भोगसि, त तुमन घलो ओहीच सोच के मुताबकि अपन-आप ला मजबूत करव, काबरका जऊन ह देहें म दुःख भोगसि, ओह पाप ले छूट गीस। 2एकर नतीजा ए होथे कि ओह बाचे संसारकि जनिगी मनखेमन के खराप ईछा मुताबकि नई, पर परमेसर के ईछा मुताबकि जीथे। 3काबरका तुमन ओ काम म पहिली बहुंत समय बति चुके हवव, जऊन ला मूरती-पूजा करइयामन पसंद करथें। तुमन अपन जनिगी ला छिनारीपन, काम-वासना, मतवालपन, भोग-बिलास, खाद्य-पीये, अऊ घनि-घनि मूरती-पूजा म बतियाय हवव। 4मूरती-पूजा करइयामन अचरज करथें, जब तुमन ओमन के संग जंगली अऊ लापरवाही के जनिगी म सामलि नई होवव, अऊ ओमन तुम्हर बेजत्ती करथें। 5पर ओमन परमेसर ला लेखा दर्हिं, जऊन ह जीयत अऊ मरे मन के नियाय करे बर तयार हवय। 6एकरे कारन मरे मन ला घलो सुधर संदेस के परचार करे गीस, ताकि मनखेमन के मुताबकि ओमन के देहें म नियाय होवय, पर ओमन आतमा म परमेसर के मुताबकि जीयय।

7जम्मो चीजमन के अंत जल्दी होवइया हवय। एकरसेति, साफ मन अऊ संयमी होवव, ताकि तुमन पराथना कर सकव। 8जम्मो ले बड़े बात ए अय कि एक-दूसर ला बहुते मया करव, काबरका मया ह बहुते पापमन ला तोप देथे। 9बगिर कुड़कुड़ाय एक-दूसर के पहुनई करव। 10हर एक झन आने मन के सेवा करे बर, जऊन आतमकि बरदान पाय हवय, ओह ओकर उपयोग बसिवास सहित परमेसर के अनुग्रह म अनेक किसिम ले करय।

11कहूं कोनो गोठियावय, त अइसेने गोठियावय मानो परमेसर के बचन ओकर मुहूं ले नकिरथे। कहूं कोनो सेवा करय, त ओह ओ ताकत ले करय, जऊन ला परमेसर देथे, ताकि जम्मो बात म, यीसू मसीह के दुवारा परमेसर के परसंसा हो सकय। महिमा अऊ सामरथ जुग-जुग ओकर होवय। आमीन।

#### मसीही होय के कारन दुःख सहई

12मयारू संगवारीमन, जऊन पीरा भरे दुःख, परखे बर तुम्हर ऊपर पड़े हवय, ओकर ले अचम्भो झन करव कि कोनो अनहोनी बात तुम्हर ऊपर होवत हवय। 13पर आनंद मनावव कि तुमन मसीह के दुःख म सामलि हवव, ताकि जब ओकर महिमा परगट होवय, त तुमन आनंद ले मगन हो जावव। 14कहूं मसीह के नांव के कारन तुम्हर बेजत्ती होथे, त अपन-आप ला धइन समझव, काबरका महिमा अऊ परमेसर के आतमा तुम्हर ऊपर छइहां करथे। 15कहूं तुमन दुःख भोगव, त ए दुःख भोगई ह एक हतियारा या चोर या कोनो आने किसिम के अपराधी के रूप म झन होवय, अऊ एह आने मन के काम म बाधा डलइया के रूप म घलो झन होवय। 16पर कहूं तुमन एक मसीही के रूप म दुःख भोगथव, त एकर बर झन लजावव, पर परमेसर के इस्तुती करव, कि मसीह के नांव तुम्हर संग हवय। 17नियाय के समय आ गे हवय अऊ परमेसर के मनखेमन के नियाय पहिली करे जाही, अऊ

कहूँ एकर सुरूआत हमर ले होथे, त ओमन के अंत कइसने होही, जऊन मन परमेसर के सुघर संदेस ला नई मानय? 18 जइसने की परमेसर के बचन ह कहथि,

“यदी धरमीमन बर उद्धार पाना कठनि ए,  
त भक्तहीन अऊ पापी मन के का होही?”

19 एकरसेती, जऊन मन परमेसर के ईछा के मुताबिक दुःख उठाथें, ओमन अपन-आप ला अपन बसिवास के काबलि सरिसिटी करइया परमेसर के हांथ म सऊं प देवय, अऊ बने काम करे म लगे रहय।

### अगुवा अऊ जवान मनखे मन

5 तुमन म जऊन मन अगुवा अंय, ओमन ला मेंह एक संगी अगुवा के रूप म, अऊ मसीह के दुःख उठाय के एक गवाह के रूप म अऊ परगट होवइया महिमा म सामलि होवइया के रूप म बनिती करत हंव: 2 परमेसर के ओ झुंड के, जऊन ह तुम्हर अधीन हवय, पास्टर के रूप म सेवा करत ओ झुंड के चरवाहा बनव। एह दबाव ले नई, पर जइसने परमेसर तुमन ले चाहथे, अपन ईछा ले करव; पईसा के लालच म नई, पर सेवा-भाव ले करव। 3 जऊन मनखेमन तुमन ला सऊं पेंगे हवय, ओमन ऊपर हुकूम इन चलावव, पर झुंड खातरि एक नमूना बनव। 4 अऊ जब मुखिया चरवाहा परगट होही, त तुमन महिमा के ओ मुकुट पाहू, जऊन ह अपन चमक कभू नई खोवय।

5 हे जवानमन, तुमन घलो ओही किसिम ले सयानमन के अधीन रहव। एक-दूसर के संग नमरता ले बरताव करव, काबरकी,

“परमेसर ह घमंडी मनखे के बरिध करथे,  
पर नम्र मनखे ला अनुग्रह देखे।”

6 एकरसेती, परमेसर के सामरथी हांथ के तरी अपन-आप ला नम्र करव, ताकि ओह

तुमन ला उचित समय म ऊपर करय। 7 अपन जम्मो चंति ला ओकर ऊपर छोड़ देवव, काबरकी ओह तुम्हर खियाल रखथे। 8 तुमन संयमी अऊ सचेत रहव। काबरकी तुम्हर बईरी सैतान ह एक गरजत सहि के सही एती-ओती गजिरथे अऊ ए फरिक् म रहथि कि कोनो ला चीरके खावय। 9 बसिवास म मजबूत होके ओकर मुकाबला करव, काबरकी तुमन जानत हव कि तुम्हर संगी बसिवासीमन, जम्मो संसार म एही किसिम के दुःख भोगत हवय।

10 अऊ तुम्हर थोरकन समय तक दुःख भोगे के बाद, जम्मो अनुग्रह के परमेसर, जऊन ह तुमन ला मसीह म अपन सदाकाल के महिमा बर बलाय हवय, ओह खुद तुमन ला संभालही, अऊ तुमन ला, बलवान, मजबूत अऊ स्थिर करही। 11 ओकर सामरथ जुग-जुग ले बने रहय। आमीन।

### आखरी जोहार

12 सीलास ला मेंह एक बसिवास के लइक भाई समझथेव अऊ ओकरे मदद ले मेंह तुमन ला ए थोरकन बात लिखत हवंव। मेंह तुमन ला उत्साहित करे चाहथेव अऊ अपन गवाही देवत हंव की एह परमेसर के सच्चा अनुग्रह अय। एम मजबूत बने रहव।

13 ओ कलीसीया, जऊन ह बाबूल सहर म हवय अऊ एक साथ तुम्हर संग चुने गे हवय, तुमन ला अपन जोहार कहत हवय अऊ अइसनेच मरकुस घलो जऊन ह मोर बेटा सही अय, तुमन ला जोहार कहत हवय। 14 मसीही मया म एक-दूसर के चूमा लेके जोहार कहव।

तुमन जम्मो इन ला, जऊन मन मसीह म हवव, सांति मिलिय।

a 6 “चुने हुए अऊ कीमती कोना के पथरा” के मतलब यीसू मसीह अय। b 20 “नूह”—देखव इबरानीमन 11:7